卐 श्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामप्रपन्नाचार्यप्रणीतम्

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

राघवार्यकृपापात्रः पुण्यसदननन्दनः ।

सुशीलागर्भसंभूतो रामानन्दः सुशीलदः ॥१॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

विरचिता सुबोधिनी

सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।

रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का अवतार माघकृष्ण सप्तमी विक्रमसम्वत् १३५६ में प्रयागराज में हुआ एवं श्रीसाकेत गमन चैत्र शुक्लनवमी-श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत् १५३२ में श्रीमठ पञ्चगंगाघाट वाराणसी से हुआ । आप **"रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले"** इस आगम वचनानुसार स्वयं सर्वेश्वर श्रीरामजी ही श्रीरामानन्दजी हैं अतः श्रीरामचन्द्रजी के समान जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के भी अनन्त नाम हैं तथापि जैसे श्रीरामजी के सहस्त्रनाम या अष्टोत्तरशतनाम प्रधानतया शास्त्रों में वर्णित हैं वैसे ही जगदाचार्य श्री के भी हैं । उनमें से प्रधान अष्टोत्तर शतनाम जो जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र ने आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ के संस्थापन प्रसंग में दि. १२।१।७७ ई. को वाराणसी में समुद्घोषित कर विद्वत्परिषद् में उपदेश दिये थे उन्हीं का यहाँ सर्वजन बोधापेक्षया अतिसंक्षिप्त सुबोध विवरण किया जा रहा है-

राघवार्यकृपापात्रः-श्रीसम्प्रदाय का आचार्यपीठ पंचगंगाघाट में स्थित श्रीमठ के २१ वें आचार्य जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी के विशेष स्नेह के पात्र-पट्ट शिष्य-प्रधान शिष्य **पुण्यसदननन्दनः**=श्रीपुण्यसदनजी को आनन्द प्रदान करनेवाले, **सुशीलागर्भ-संभूतः**=श्रीसुशीलादेवीजी के गर्भ से समुत्पन्न, **सुशीलदः**=सभी को सुन्दरशील-स्वभाव को प्रदान करनेवाले **रामानन्दः**=**"रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतोमहीतले"** इस वचन के प्रामाण्य से सभी को आनन्द प्रदान करनेवाले सर्वभूतों में रमणशील एवं जिनमें योगिजन रमण करते हैं **सुशीलदः**=अच्छे स्वभाव को देनेवाले एतादृश श्रीरामरूप रामानन्द यानी जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी को अनेकशः सादर नमन है ॥१॥

राममन्त्रप्रदः श्रीमान् सीतापादाब्जसेवकः ।

अमानीमानदोभर्ताशरण्यो वेदपारगः ॥२॥

राममन्त्रप्रदः=ब्रह्मतारक षडक्षर मन्त्रराज श्रीराममहामन्त्र जो साधकों को ऐहिक पारलौकिक भुक्ति-मुक्ति प्रभृति सभी आकांक्षित तत्त्वों को प्रदान करनेवाला है उसको शरणापन्न सभी साधकों को प्रदान कर उसका उद्धार करनेवाले । **श्रीमान्**=श्रीसम्पत्ति या षडैश्वर्यशाली पारमार्थिक दिव्य श्री से सम्पन्न । **सीतापादाब्जसेवकः**=सर्वेश्वर श्रीरामजी से अभिन्न रूपा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के श्रीचरणरूपी कमलों की अनन्यभाव से सेवा करने वाले। **अमानी**=सर्वगुण सम्पन्न होने पर भी किसी प्रकार का मान-अभिमान नहीं करनेवाले । **मानदः**=सभी प्रकार के मानवों या जीवमात्र को मान-सम्मान प्रदान करने वाले। **भर्ता**=समस्त जीव वर्गों का भरण-पोषण करनेवाले । **शरण्यः**=नीच ऊंच के भेदभाव विना शरण में आये सभी को शरण देकर उसका उद्धार करनेवाले । **वेदपारगः**=वेदों के पारगामी-अन्तः स्पर्शी तत्त्वों को प्राप्त करनेवाले या सभी वेद तत्त्वों के पारंगत विशिष्ट विद्वान् ॥२॥

तीर्थराजसमुत्पन्नस्तीर्थीकृतसुविग्रहः ।

साधुः साधुगुणोपेतः संसारार्णवतारकः ॥३॥

तीर्थराजसमुत्पन्नः=तीर्थराज प्रयाग में तीन प्रवर वाले वशिष्ठ गोत्रीय शुक्लयजुर्वेद वाजसलेयी माध्यन्दिन शाखा को पढ़नेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में माघकृष्ण सप्तमी विक्रम सम्वत् १३५६ में उत्पन्न एवं, **तीर्थीकृतसुविग्रहः**=श्रीरामजी के अवतार होने से सुन्दर दिव्य शरीर तो था ही तो भी तप एवं परोपकारों से अपने शरीर को अत्यन्त पवित्र करनेवाले। **साधुः**=सदा परोपकार परायण रहकर या दूसरों के कार्यों का ही सम्पादन कर समय यापन करनेवाले। **साधुगुणोपेतः**=परोपकार सम्बन्धी सभी गुणों से सर्वदा युक्त रहनेवाले । **संसारार्णवतारकः**=भोग विलासासक्त जीवों को तत्त्वत्रय एवं रहस्यत्रयों के उपदेश से संसार रूप समुद्र से पार उतारने वाले, यानी साधकों को श्रीराम तत्त्वोपदेश करके संसार सागर से पार उतारने वाले ॥३॥

सुशोभनतनुः संवित् सुहृद्वन्द्योजगत्प्रियः ।

सर्वसज्जनसंसेव्यः शारदाराधनेरतः ॥४॥

सुशोभनतनुः=देखनेवालों के चित्त को आकर्षित करनेवाला सुन्दर शरीर वाले । **संवित्**=सभी प्रकार के संकेतों को जानने वाले एवं सत्य संभाषण-सदुपदेश करनेवाले या शिष्टाचार का पालन करने एवं कराने वाले विशिष्ट ज्ञानी । **सुहृद्वन्द्यः**=कृपा पूर्ण हृदय वाले सभी के स्नेही या हार्दिक मैत्रीपूर्ण भावना वाले जनों से वन्दनीय व संपूजित ।

जगत्प्रियः=जीवों के प्रति अद्वेष भावना होने से जगत् के सभी जनों के प्रिय । **सर्वसज्जनसंसेव्यः**=सभी सज्जनों से अच्छी प्रकार से सेवनीय सेवा करने योग्य । **शारदाराधनेरतः**=शारदा-सरस्वती-वाग्देवी की आराधना सेवा प्रस्थानत्रयों के आनन्द भाष्यादि सद्ग्रन्थों के निर्माण एवं उपदेश में रत-सदा तत्पर यानी सद्ग्रन्थ निर्माण तथा उपदेश के द्वारा भारतीय वैदिक वाङ्मय रूप शारदा की सेवा में सर्वदा निरत रहने वाले ॥४॥

प्रसन्नात्मा सुवाग्धीरो भूयिष्ठज्ञानदोविभुः ।

अधीतवेदवेदाङ्गो वेदरक्षणतत्परः ॥५॥

प्रसन्नात्मा=प्रसन्न-स्वच्छ, निर्मल राग द्वेष रहित चित्तवाले । **सुवाक्**=सुन्दर परिनिष्ठित सत्य वाणी वाले । **धीरः**=स्व-धर्म एवं कर्म तथा कर्तव्य से कभी भी विचलित न होने वाले परम धैर्यशाली यानी "**विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः**" इस नीति वचनानुसार विकार के साधन समक्ष होने पर भी अपने सन्नीति मार्ग से स्वप्न में भी विचलित न होने वाले । **भूयिष्ठज्ञानदः**=समाश्रित साधक सायुज्य मुक्ति प्राप्त करे ऐसे तत्त्व ज्ञान को प्रचुर मात्रा मैं प्रदान करनेवाले अर्थात् तत्त्वज्ञान के उपदेष्टा । **विभुः**=समाश्रित साधकों के आत्मिक भावनाओं को जानकर उनके भावानुरूप कार्य सम्पादन करनेवाले व्यापक सामर्थ्य वाले। **अधीतवेदवेदाङ्गः**=चारो वेद एवं शिक्षा कल्प व्याकरण ज्योतिष छन्द निरुक्त आदि वेदों के अंगभूत शास्त्रों को यथाविधि पढकर तदनुरूप ही शिष्यों को शिक्षा देनेवाले। **वेदरक्षणतत्परः**=सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के निश्वास रूप ज्ञानराशी वेद शास्त्रों के संरक्षण में सर्वदा तैयार रहनेवाले ॥५॥

वेदान्तमर्मविद्धीमान् ज्ञानानन्दैकविग्रहः ।

वेदान्तसूत्रसारज्ञः प्रस्थानत्रयभाष्यकृत् ॥६॥

वेदान्तमर्मवित्=वेदों एवं वेद के अन्त भाग ज्ञान काण्ड-उपनिषदों के वास्तविक मर्म रहस्य तत्त्व को यथार्थ रूपसे जानने वाले । **धीमान्**=सर्व तत्त्व ग्राहक विशिष्ट बुद्धिवाले । **ज्ञानानन्दैकविग्रहः**=ज्ञान एवं आनन्द रूप प्रधान शरीरवाले यानी स्वयं सदा आनन्दित रहकर दूसरे साधकों को ज्ञान तथा आनन्द प्रदान करनेवाले । **वेदान्तसूत्रसारज्ञः**=श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के सातवें आचार्य श्रीव्यासजी से रचित वेदान्त सूत्र-ब्रह्मसूत्रों के सार तत्त्वों को यथार्थ रूपसे जानने वाले । **प्रस्थानत्रयभाष्यकृत्**=प्रस्थान-उपनिषदों-ब्रह्मसूत्र एवं गीता इन तीन प्रस्थानों में सर्वशास्त्रानुकूल विशद अर्थ गर्भ प्रसन्न गंभीर आनन्दभाष्यों के रचना करनेवाले ॥६॥

आनन्दनिलयः पूज्यः पुण्यकीर्तिः प्रतापवान् ।

तारकजापकोमान्यः प्रणतार्तिहरः स्वराट् ॥७॥

आनन्दनिलयः=आनन्दप्रदायक श्रीसाकेतरूप निवासस्थान वाले या मुक्ति प्रदायक काशी पंचगंगाघाट स्थित आचार्यपीठ श्रीमठ रूप आवासस्थान वाले । **पूज्यः**=पूजनीय-सर्व शास्त्र एवं सभी सदाचरणों में पारंगत होने से निष्पापतया आराधनीय । **पुण्यकीर्ति**=पवित्र या पुण्यदायक कीर्ति यश वाले । **प्रतापवान्**=सभी को अपने दिव्य तेज से अभिभूत करने में सक्षम विशेष तेज वाले । **तारकजापकः**=ब्रह्मतारक षडक्षर श्रीराममहामन्त्रराज का सर्वदा जप करनेवाले । **मान्यः**=माननीय-समाज के सभी वर्गों के लोगों से संपूजित । **प्रणतार्तिहरः**=शरण में आये हुये जनों के दुःखों को हरण करनेवाले । **स्वराट्**=अपने ही सत्कर्मों सदुपासनाओं या परोपकार परायणता से संदीप्त प्रकाशित होनेवाले ॥७॥

मायावाद्युरगताक्ष्र्यो निर्गुणकुञ्जकेसरी ।

विशिष्टाद्वैतमार्तण्डः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रकः ॥८॥

मायावाद्युरगताक्ष्र्यः=अवैदिक मायावाद-अद्वैतवाद-शांकरमतरूप उरग-सर्प के विदलन के लिये ताक्ष्र्य-गरुड स्वरूपवाले । एवं, **निर्गुणकुञ्जकेसरी**=वेद मत विरुद्ध केवल निर्गुण मतरूप कुञ्ज-हाथी के विदलन हेतु सिंह स्वरूप । **विशिष्टाद्वैत मार्तण्डः**=श्रुतिस्मृति के अनुकुल एवं समस्त पूर्वाचार्यों से समर्थित श्रौतविशिष्टाद्वैत मतरूप कमल को विश्व में विकसित करने के लिये मार्तण्ड-सूर्य स्वरूप । **सर्वतन्त्र-श्वतन्त्रकः**=न्याय मीमांसा वैशिषिक वेदान्त प्रभृति सभी तन्त्र सिद्धान्तों में श्वतन्त्र-अपराधीन रूपसे सभी सिद्धान्तों के पारदर्शी ज्ञानवाले ॥८॥

बोधायनमतदीपो बोधयुक् वादवारिधिः ।

यतिराट् सर्वतत्त्वज्ञः सर्वजित् सर्वरक्षकः ॥९॥

बोधायनमतदीपः=श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के नवमें आचार्य जगद्गुरु श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन से ब्रह्मसूत्र विवरण बोधायनवृत्ति में प्रतिपादित श्रौत विशिष्टाद्वैतमत को अपने आनन्दभाष्यरूप दीप के द्वारा प्रकाशित करनेवाले । **बोधयुक्**=सत् एवं असत् रूप तत्त्व ज्ञान से युक्त । **वादवारिधिः**=श्रुतिस्मृति तत्त्व निर्णय रूपवाद-शास्त्र चर्चा में वारिधि-समुद्र के समान अगाध स्वरूप वाले । **यतिराट्**=संसार को परमार्थ पूर्वक त्यागकर इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखकर पारमार्थिक जीवन जीनेवालों में राजा-सर्वश्रेष्ठ यानी परम बीतराग वाले । **सर्वतत्त्वज्ञः**=ऐहिक एवं पारमार्थिक सभी तत्त्वों को पूर्ण रूपसे जानने वाले ।

सर्वजित्=शास्त्र से यौगिक साधनाओं या प्रेम से सभी वर्ग के व्यक्तियों को जीतनेवाले । **सर्वरक्षकः**=दीन-हीन ऊंच-नीच अमीर-गरीब सभी वर्गों के जीवों को विना किसी भेद-भाव संरक्षण करनेवाले ॥९॥

सुवैराग्यशिरोरत्नः साधुपः सत्यभूषणः ।

श्रीरामनामतत्त्वज्ञोरहस्यत्रयबोधकः ॥१०॥

सुवैराग्यशिरोरत्नः=परम विरक्त साधकों में भी महावैराग्य शाली होने से उनके शिर के रत्न के समान यानी विरागशाली लोगों के मस्तक स्थित आभूषण के समान या सभी ऐहिक काम्य कामनाओं से रहित होने से वैराग्य वालों में सर्वश्रेष्ठ । **साधुपः**=परोपकार परायण मानवों का संरक्षण करनेवाले। **सत्यभूषणः**=सत्य आचरण व सत्य भाषण रूप भूषण-शोभावाले । **श्रीरामनामतत्त्वज्ञः**=श्रीरामनाम या श्रीसीताजी सहित श्रीरामजी के नामों का वास्तविक तत्त्वों को जानने वाले । **रहस्यत्रयबोधकः**=षडक्षर मन्त्रराज श्रीराममहामन्त्र द्वयमन्त्र एवं चरम मन्त्रों के तत्त्वों को-विशिष्ट रहस्यों को शरणापन्न मुमुक्षुओं को बोध करानेवाले ॥१०॥

रामावतारः सत्सेव्यः सकलेश्वरपूजकः ।

लोकत्रयव्याप्तकीर्तिः सन्न्यायपथरक्षकः ॥११॥

रामावतारः="**रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले**" इस आगम वचन के अनुसार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी सर्वेश्वर श्रीरामजी के अवतार हैं इसीलिये आपके चरितों में लोकोत्तर चमत्कार पूर्व कार्यों का अवलोकन होता है जो अन्य किसी भी आचार्यों में नहीं अतः श्रीरामजी के अवतार स्वरूप । **सत्सेव्यः**=सत् आचरण शील व्यक्तियों से सेवनीय। **सकलेश्वरपूजकः**=स्थावर जंगम सभी के ईश्वर-नियन्ता, उत्पादक, पालक एवं संहारक परब्रह्म श्रीरामजी के पूजक-सविधि सर्वदा पूजा करनेवाले । **लोकत्रयव्याप्तकीर्तिः**=तीनों लोकों में अतिविस्तृत-फैली हुई कीर्ति-सुयश वाले । **सन्न्यायपथरक्षकः**=सम विसम किसी भी स्थिति में सत्य सनातन वैदिक मार्ग का रक्षण करनेवाले ॥११॥

जगद्गुरु र्गुणज्ञाता गुणनिष्ठोगुणप्रियः ।

रामभक्तिप्रदोध्येयोगरीयान् तत्त्वविच्छुचिः ॥१२॥

जगद्गुरु :=जीवों के अज्ञान रूप अन्धकार को दूर कर ज्ञान रूप प्रकाश के द्वारा सत्पथारूढ कर सायुज्य मुक्ति दिलाने वाले-समस्त संसार के हितोपदेशक सत् गुरु । **गुणज्ञाता**=सर्वेश श्रीरामजी के दया दाक्षिण्य वात्सल्यादि सभी गुणों के ज्ञाता-जानने वाले या मानव में स्थित गुण अवगुण के ज्ञाता। **गुणनिष्ठः**=श्रीरामचन्द्रजी के अनन्त गुणों में पूर्ण निष्ठा

रखनेवाले। **गुणप्रियः**=अनन्त रूपसे रहे हुये श्रीरघुवरजी के गुणों को अति प्रिय मानने वाले। **रामभक्तिप्रदः**=शरणागत वत्सल श्रीरामजी के भक्ति को मानव मात्र के उद्धार के लिये सभी को देनेवाले यानी सभी वर्ग के व्यक्तियों स्त्री वा पुरुषों को भक्ति का उपदेश देकर उन सव का उद्धार करनेवाले। **ध्येयः**=सभी के हित चिन्तक होने से गुरु एवं गोविन्द इन दोनों के एकाकार के रूपमें समान भक्तितया ध्यान करने योग्य। **गरीयान्**=विशेष बुद्धिशाली होने से अन्य आचार्यों के अपेक्षा महत्वपूर्ण क्रिया कलाप वाले या अति प्रतिष्ठित। **तत्त्ववित्**=परब्रह्म स्वरूप तत्त्व को जानने वाले। **शुचिः**=बाहर एवं अन्दर के यानी व्यवहारिक एवं मानसिक सभी क्रिया कलापों में पवित्र व्यवहार वाले ॥१२॥

रामनामतनुत्राणोरसज्ञोरामवित् कृतिः।
गुणैकदर्शीगुह्यार्थभाषको वाक्यसारवित् ॥१३॥

रामनामतनुत्राणः=श्रीरामनाम जप रूप वचन से अपने शरीर का रक्षण करने वाले। **रसज्ञः**=श्रीसीताराम नाम जप एवं कीर्तन तथा अनुष्ठान सम्बन्धी रस-माधुर्यपना को जाननेवाले। **रामवित्**=सभी देवों साधकों से उपास्य परब्रह्म श्रीरामजी के यथार्थ स्वरूप को जाननेवाले। **कृतिः**=तथातथ्य विवेक कुशल विशिष्ट व्यक्तित्व वाले। **गुणैक दर्शी**=मानवों में स्थित अवगुणों के तरफ ध्यान न देकर केवल उन में विद्यमान सद्गुणों को ही देखनेवाले। **गुह्यार्थभाषकः**=सारगर्भित गहन अर्थ से युक्त एवं तथ्य पूर्ण भाषण करनेवाले। **वाक्यसारवित्**=श्रुतिस्मृति इतिहास आदि एवं पूर्वाचार्योपदिष्ट वाक्यों के सारतत्त्व को यथार्थ रूपसे जाननेवाले ॥१३॥

समदर्शी पवित्रात्मा पूतपापः पराक्रमी।
त्रैगुण्यसङ्गरहितस्तत्त्वत्रयप्रचारकः ॥१४॥

समदर्शी=ऊंच नीच अमीर गरीब पठित अपठित सभी वर्गों के ऊपर किसी भी प्रकार का भेदभाव विना समान दृष्टि रखनेवाले। **पवित्रात्मा**=पवित्र अन्तःकरण वाले। **पूतपापः**=सभी प्रकार के पापों से रहित अति पवित्र। **पराक्रमी**=अकर्मण्य रूपसे न बैठकर ऐहिक एवं पारमार्थिक सिद्धियों के प्रास करने के लिये सतत प्रयत्न शील रहनेवाले। **त्रैगुण्यसङ्गरहितः**=अधः पाती तीन गुणों के संग से रहित या तामसी स्वभाव वाले व्यक्तियों के संगति से दूर रहनेवाले। **तत्त्वत्रयप्रचारकः**=जीव ब्रह्म एवं प्रकृति रूप शास्त्रीय तीन तत्त्वों का अपने आनन्दभाष्य ग्रन्थों प्रवचनों सत्संगतिओं के द्वारा मानव कल्याणार्थ प्रचार करनेवाले ॥१४॥

दुर्गुणतमसंहर्ता विद्वद्गोष्ठिप्रसेवितः।

कमलनयनः कान्तः पद्माननः सतां निधिः ॥१५॥

दुर्गुणतमसंहर्ता=लोकों के दुर्गुण-खराब गुण रूप अन्धकार को सदुपदेश रूप ज्ञान के प्रकाश से हरण करनेवाले। **विद्वद्गोष्ठिप्रसेवितः**=तथ्य एवं अतथ्य विचारशील लोगों के विचार सभा से विशेष रूपसे आदर पूर्वक सेवित। **कमलनयनः**=कमल के समान सुन्दर आँख वाले। **कान्तः**=दर्शक के चित्त को मोहित करनेवाले अतिकमनीय शरीर वाले **पद्माननः**=कमल के समान मुखमण्डल वाले। **सतांनिधिः**=सदाचार परायण जनों के खजाने-सभों से अपेक्षित तत्त्वज्ञान के भण्डार होने से खजाने या नव निधि वाले ॥१५॥

त्रिदण्डमण्डितः श्रेष्ठश्चूडावान् विवुधाकृतिः ।

ऊर्ध्वरेतः शुभान्वेषी स्तोतव्योभास्करप्रभः ॥१६॥

त्रिदण्डमण्डितः=श्रुतिस्मृति बोधित धर्म निष्ठता के ज्ञापक मन वाणी कर्म एवं शरीर के संयम सूचक त्रिदण्ड से मण्डित-शोभित या अपने दिव्य कर कमलों से श्रौतविशिष्टाद्वैत सिद्धान्त तत्त्व के बोधक त्रिदण्ड को धारण कर उसे सुशोभित करने वाले एवं होनेवाले अथवा सत्व रज तम, भूत भविष्य वर्तमान, प्रातः मध्याह्न सन्ध्या प्रभृति त्रिकों के प्रतिनिधि स्वरूप धर्म दण्ड रूप त्रिदण्ड से शोभित होकर तदनुरूप कार्यों को सम्पादन करनेवाले। **श्रेष्ठः**=अविच्यूत रूपसे धर्म-कर्मानुष्ठाता होने से अति उत्तम। **चूडावान्**=कटि पर्यन्त सुशोभित सुन्दर शिखा वाले। **विवुधाकृतिः**=देवता के समान मन मोहक दिव्य आकृति वाले। **ऊर्ध्वरेतः**=अखण्ड बाल ब्रह्मचारी-स्मरण कीर्तन केली दर्शन गुह्यभाषण संकल्प अध्यवसाय तथा क्रियानिवृत्ति प्रभृति अष्टविध ब्रह्मचर्य घातक क्रिया कलापों से सर्वथा वर्जित। **शुभान्वेषी**=परमार्थ साधक शुभ तत्त्वों के अन्वेषणशील। **स्तोतव्यः**=स्तुति करने योग्य। **भास्करप्रभः**=सूर्य के समान दूसरों को अभिभूत कर देनेवाले प्रखर तेज से युक्त या अपने ज्ञान रूप सूर्य के प्रकाश से दूसरों के अज्ञान रूप अन्धकार को दूरकर देनेवाले सूर्य के प्रभा जैसे तेज वाले ॥१६॥

भूभारहारकाचार्योदीनबन्धुर्दयाकरः ।

अनन्तशिष्यो ज्ञानाब्धिर्ज्ञानगम्यो गुणाश्रयः ॥१७॥

भूभारहारकाचार्यः=मायावाद अनीश्वरवाद म्लेक्षवाद प्रभृति वेदवाह्यवाद रूप भार से दवी पृथिवी के भार को हरण कर अनादिवैदिक श्रौतविशिष्टाद्वैतवाद का प्रचार-प्रसार कर सनातन धर्म की ओर जनसमूहों को अग्रसारित करनेवाले विशिष्ट आचार्य। **दीन-वन्धुः**=दीन-दुःखी दलित वर्ग को पूर्ण आश्रय प्रदान करनेवाले करुणामूर्ति। **दया कर**:=सभी के ऊपर उदार भाव वाले दया के खजाने स्वरूप। **अनन्त-**

शिष्यः=श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी प्रभृति प्रधान बारह शिष्य वाले या गिने न जा सके ऐसे अनन्त शिष्य-प्रशिष्य वाले । **ज्ञानाब्धिः**=तत्त्वामृतज्ञान के समुद्र स्वरूप । **ज्ञान-गम्य**=श्रीरामजी के अवतार होने से श्रीरामचन्द्रजी के समान ही धीर गम्भीर होने से उन्ही के द्वारा जनाये गये ज्ञान-वेद-तत्त्वोपदेश से ही गम्य-जाने जा सकने वाले । **गुणा-श्रयः**=शास्त्रों में वर्णित सभी गुणों के आश्रय-आधारभूत जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी को अनन्त वार सादर दण्डवत् प्रणाम है ॥१७॥

रामानन्दमठेश्वरेण कृतिना स्वाचार्यनामावली
नाम्नामष्टशतोत्तरा सुविमला सिद्धान्तसंसूचिका ।
सूरेर्वक्षसिभावसिक्तमनसामुक्तिप्रदादेहिनां
विन्यस्ता जपतां सुखं प्रतनुतां श्रीयोगिराजेन या ॥१८॥

या=जो यह आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी की एक सौ आठ दिव्य नामों की माला है वह **जपताम्**=नियत रूप से जप पाठ करनेवाले **देहिनाम्**=मनुष्यों को **मुक्तिप्रदा**=सायुज्य मुक्ति देनेवाली है जो कि सिद्धान्त **संसूचिका**=अनादिवैदिक श्रौतविशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का बोध करानेवाली है एवं **सुविमला**=अतिस्वच्छ है जो **नाम्नाम्**=नामों के **अष्टशतोत्तरा**=एक सौ आठ की स्वाचार्य **नामावली**=अपने श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के आचार्य प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकारजी के दिव्य एक सौ आठ नामों की पंक्ति है वह **कृतिना**=विवेकी विद्वान् **रामानन्दमठेश्वरेण**=जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का मठ-पीठ के ईश्वर-अध्यक्ष-पीठाचार्य **श्रीयोगिराजेन**=श्रीयोगिराज इस उपनाम से प्रसिद्ध जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी ने **भावसिक्तमनसा**=आन्तरिक स्वच्छ भावना से युक्त मन से भक्तिपूर्वक **सूरेः**=दिव्य पुरुष श्री आचार्यजी के **वक्षसि**=हृदय में **विन्यस्ता**=सादर समर्पित है वह श्रीआचार्यजी के नामरूपी माला **जपताम्**=नियमतः विधिपूर्वक जपनेवालों को **सुखम्**=सार्वदिक सुख-सायुज्य मुक्ति को **प्रतनुताम्**=प्रदान करे ॥१८॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

卐 जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्य 卐

विरचिता ☬ सुबोधिनी

卐 श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये 卐

卐 ☬ 卐